नचिकेता

मकरंद दवे



बच्चोंकी कहानियाँ

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगडों, जलन और बैर की वजह से हम कमज़ोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये जमाने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमजोर और खतरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हक़ीक़त है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुक़ाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर ज़ोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैग़म्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज़्ज़त की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफ़सोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमज़ोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की जरूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना जरूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और ज़िन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बडे-बडे संत-पैग़म्बरों की ज़िन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुडी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

नचिकेता

मकरंद दवे

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

चित्रकार :
दिनेश शाह

मूल्य :
दो रुपये

मुद्रक :
जितेन्द्रभाई ठाकोरभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय
अहमदाबाद–३८० ०१४

प्रकाशक :
वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई–४०० ००२

एकमात्र विक्रेता

एस० चन्द एण्ड कम्पनी लि०

मुख्य कार्यालय : रामनगर, नयी दिल्ली-११००५५
शो रूम : ४/१६-बी, आसफ अली रोड, नयी दिल्ली – ११०००२

शाखाएं :

अमीनाबाद पार्क, लखनऊ-२२६००१
२८५/जे, बिपिनबिहारी गांगुली स्ट्रीट, कलकत्ता-७०००१२
सुल्तान बाजार, हैदराबाद-५०००0१
३, गांधी सागर ईस्ट, नागपुर-४४०००२
खजांची रोड, पटना-८००००४
माई हीरां गेट, जालन्धर-१४४००१
१५२, अन्ना सलाए, मद्रास-६००००२
ब्लैकी हाऊस, १०३/५, वालचन्द हीराचन्द मार्ग, बम्बई-४००००१
के० पी० सी० सी० बिल्डिंग, रेसकोर्स रोड, बंगलोर–५६०००९
६३१–७, महात्मा गांधी रोड, एर्नाकुलम, कोचीन-६८२०११

नचिकेता

उद्दालक आरुणि नाम के एक ऋषि थे। वे बड़े-बड़े यज्ञ करते थे और उनमें बहुत दान देते थे।

उनके पिता का नाम वाजश्रवा था और इस कारण आरुणि को वाज-श्रवस के नाम से भी जाना जाता था। वाज माने अन्न का दान, और श्रवा माने जिसका यश फैला हो। इस तरह वाजश्रवा का मतलब हुआ अन्न के दान से मशहूर।

पिता का यशस्वी नाम लोग भूल न जायें, इसलिए वाजश्रवस ने यज्ञ और दान की परंपरा जारी रखी थी। 'विश्वजित' नाम का यज्ञ करके, स्वर्ग का फल प्राप्त करने की भी उनकी इच्छा थी। लेकिन एक बड़ी कमी थी और वह यह कि दान देने के पीछे हृदय की जो विशालता और उदारता होनी चाहिए, वह उनमें न थी।

वाजश्रवस का एक पुत्र था। उसका नाम था नचिकेता। अभी था तो वह सिर्फ पांच साल का, लेकिन अत्यंत बुद्धिमान और तेजस्वी था।

एक बार वाजश्रवस अपना यज्ञ पूरा कर, गायों का दान देनेवाले थे। उन्होंने पुत्रप्रेम के कारण अच्छी-अच्छी गायें घर के लिए रख लीं और दान देने के लिए बूढ़ी, दुबली, दूध न दे सकनेवाली गायें निकालीं।



नचिकेता पिता के पास ही खड़ा था। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ। दान तो ऐसी वस्तु का देना चाहिए जो अपनी सबसे प्रिय हो। जो अपने को पसंद न हो, निकम्मा लगे, उसका क्या दान देना? नचिकेता को लगा कि पिताजी यह ठीक नहीं करते हैं, लेकिन उनसे यह बात कही कैसे जाये?

वाजश्रवस एक-के-बाद-एक ब्राह्मणों को बुलाकर बूढ़ी, निर्बल गायें दान में दिये जाते थे और खुद, बड़ा पुण्य करते हैं, ऐसा संतोष मानते थे।

नचिकेता से यह सब सहा न गया। उसने सच्चे दान की ओर पिता का ध्यान खींचने के लिए पूछा, "पिताजी, यदि दान में मुझे देना हो तो आप किसे देंगे?"

वाजश्रवस ने नचिकेता का सवाल सुनकर भी अनसुना कर दिया।

नचिकेता ने फिर पूछा।

वाजश्रवस कुछ नाराज हुए, लेकिन जवाब नहीं दिया।

नचिकेता ने तीसरी बार आवाज ऊंची करके पूछा, "पिताजी, बोलिये तो सही! मुझे आप किसे दान में देते हैं?"

वाजश्रवस को हठी बालक पर भारी गुस्सा आया और गुस्से में ज्यादा कुछ सोचे बिना वे बोले, "तुझे यमराज को देता हूं, जा!"

कहने को तो कह दिया, लेकिन बाद में उन्हें बहुत पछतावा हुआ। कौन पिता अपने बालक को मौत के पास भेज सकता है?

नचिकेता के मन में, पिता की बात से बहुत सारे सवाल खड़े हुए—पिताजी को इतना क्रोध क्यों आया? पुत्र का वियोग तो पिता को बहुत भारी पड़ता है।

फिर नचिकेता को लगा कि मुझे पिता की बात का पालन करना ही चाहिए। शिष्य और अच्छे बेटे हमेशा गुरु और पिता की बात का पालन करते हैं। मैं जानता हूं कि पिता ने केवल गुस्से में आकर ऐसा कह दिया है, लेकिन मैं उसके अनुसार करूं तो इसमें मुझे तो कोई नुकसान है ही नहीं। यह देह तो एक बार ऐसे भी नाश होनेवाली ही है।

यमराज का नाम सुनकर उसके मन में दूसरे प्रश्न भी उठे। मौत माने क्या? मृत्यु के बाद मनुष्य का क्या होता होगा? ऐसे सवाल तो बहुत लोगों के

मन में उठते होंगे। लेकिन उनके जवाब खोजने की उत्सुकता किसी को शायद ही होती होगी।

नचिकेता में इतनी छोटी उम्र में भी सत्य की खोज का दृढ़ संकल्प था। उसने मृत्यु का रहस्य जानने का निश्चय किया और उसके लिए घर–बार छोड़कर, जंगल में जाकर, तपस्या करने की बात उसने ठान ली।

जंगल जैसे मृत्यु का द्वार! बाघ और भालू जैसे हिंसक प्राणी वहां रहते हैं। वहां एक छोटे बच्चे को, अकेले कैसे जाने दिया जाये?

पिताजी को बहुत दुःख हुआ लेकिन नचिकेता ने उनको समझाते हुए कहा, "पिताजी, अपने पूर्वजों का विचार कीजिये। वे कभी अपने वचन से नहीं मुकरते थे। आज के महा-पुरुषों की तरफ देखिये। वे भी क्या बोलकर मुकर जाते हैं?

"आपके वचन भी बेकार नहीं जाने चाहिए। मेरी चिन्ता न कीजिए। मुझे यमराज के यहां जाने दीजिए। मैं मृत्यु का रहस्य जानकर, आपके पास आऊंगा।"

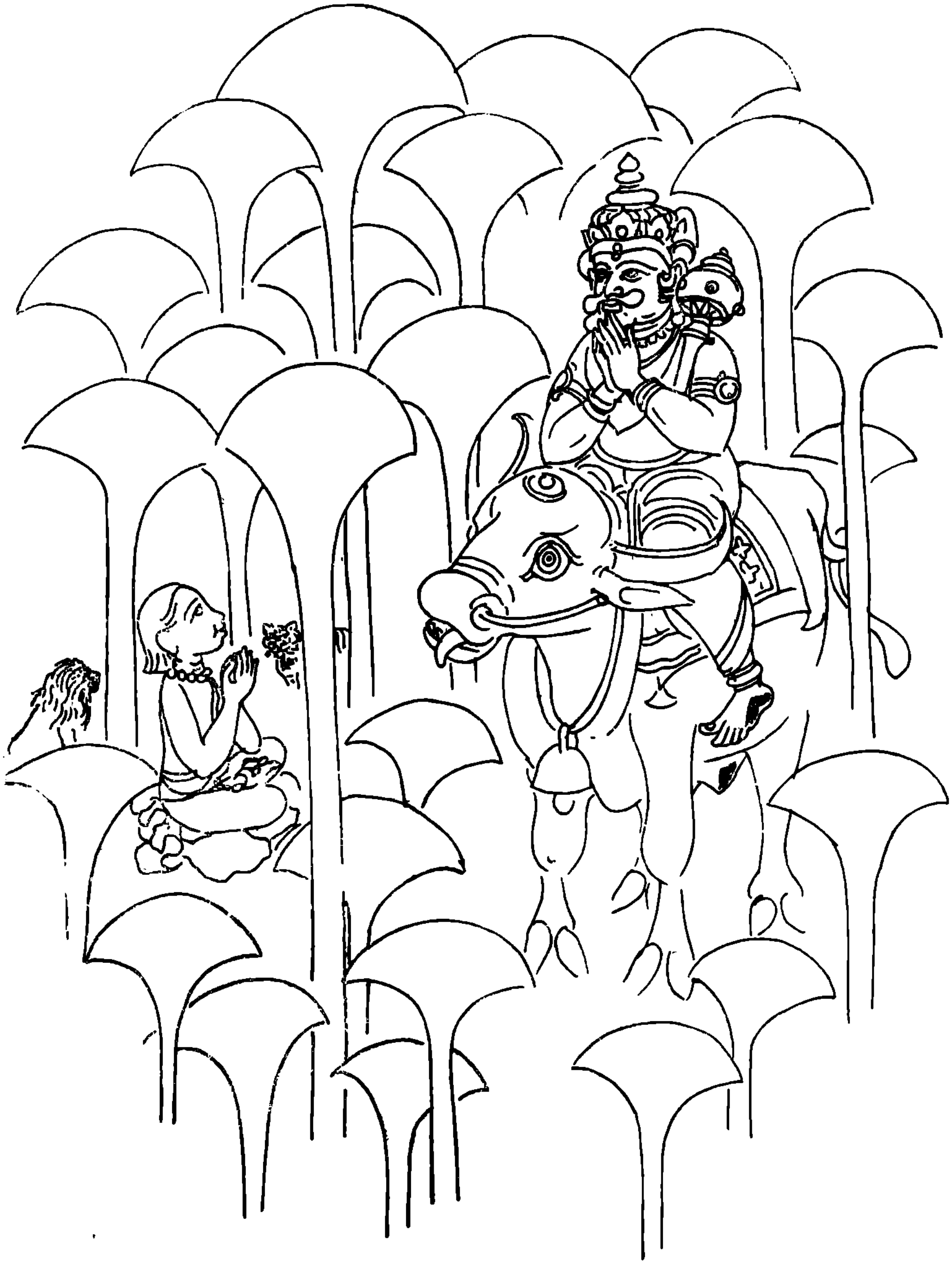
नचिकेता ने जंगल की राह पकड़ी।

नचिकेता को तो यमराज से मिलना था, इसलिए उसे बाघ, भालू, भेड़िये का डर क्यों होता भला! मनुष्य को सबसे बड़ा भय मरने का ही होता है। लेकिन जो मृत्यु को समझने का संकल्प लेकर निकलता है, उसका भय टिक नहीं सकता।

जंगल में एक निर्जन जगह पर नचिकेता आसन जमाकर बैठ गया। उसे एक ही धुन थी–यमराज से मिलने की, मृत्यु का रहस्य जानने की। तीन दिन और तीन रात उसने ऐसे ही बिताये। न उसको भूख लगी, न प्यास। न उसने नींद की परवाह की, न आलस्य में फिसला। रात-दिन जलते दीपक की तरह वह साधना में डूबा रहा।

इस एकाग्र तप से उसके भीतर एक नयी शक्ति आ गयी।

नचिकेता अपने को पूरी तरह शांत करके, धैर्य और आशा के साथ यम की राह देखने लगा। तीन दिन बाद उसको उजाला जैसा अनुभव हुआ। मृत्यु के देव यमराज स्वयं उसके भीतर प्रवेश कर, उसके साथ बात करने लगे और



कैसा अचरज, सब लोग तो यमराज की भयंकरता की बातें करते थे, उनसे डरते थे, लेकिन जब नचिकेता ने यमराज को अपने सामने देखा तो उसे वे जरा भी भयंकर न लगे। वे तो पिता जैसे वत्सल, गुरु के जैसे करुणामय थे।

नचिकेता ने तीन दिन तक यमराज के दरवाजे पर आवाज लगायी थी। बच्चे के इस कठिन तप से यमराज चकित थे।

यमराज ने कहा, "नचिकेता, मैं तुझ पर बहुत खुश हुआ हूं। तू मुझसे जो चाहे, वे तीन वरदान मांग।"

यदि कोई तुम्हें ऐसी मनचाही चीज मांगने को कहे तो क्या मांगोगे? देखो, नचिकेता ने क्या मांगा।

नचिकेता ने पहले अपने पिता का विचार किया। पिता की याद आते ही उसको लगा कि वे चिंता करते होंगे, शायद नाराज भी हों, क्योंकि मैंने प्रश्न पूछकर उनको नाराज किया था।

इसलिए उसने पहला वरदान मांगा :

"यमदेव, मेरे पिता का मन शांत हो, ऐसा करो। मुझ पर जो उनका गुस्सा है, वह पिघल जाय, और मैं उनके पास वापस जाऊं, तो उनको विश्वास हो कि मैं आपकी कृपा पाकर आया हूं।"

जीते-जी तो कोई मृत्यु का रहस्य जान नहीं सकता है। इसलिए नचिकेता वापस जाकर अपना अनुभव कहेगा तो क्या उसके पिता उसकी सच्चाई पर भरोसा करेंगे? इसलिए पिता का क्रोध शांत करने के साथ, अपने अनुभव की सच्चाई के बारे में किसी को शक न हो, यह बात भी नचिकेता ने मांग ली।

पांच साल के बालक में इतनी गहरी समझ देखकर यमराज हैरान रह गये।

यमराज बोले, "ऐसा ही होगा। तू मृत्यु के मुंह से उनके पास वापस जायेगा तब वे पहले की तरह ही तुझसे स्नेह का बर्ताव करेंगे और तू जो कहेगा उस पर विश्वास करेंगे। यह पहला वरदान मैंने तुझे दिया। नचिकेता, अब तू दूसरा वरदान मांग।"

नचिकेता ने उत्साह में आकर पूछा, "यमदेव, दूसरे वरदान में मुझे अग्निविद्या क्या है, यह समझाइये।

मैंने ऐसा सुना है कि अग्निविद्या की साधना करने से मनुष्य अमर होता है। तो, यह अग्नि क्या है? यज्ञ क्या है? कृपा करके, दूसरे वर में मुझे यह ज्ञान दीजिये।"

मनुष्य ने अपने सांसारिक जीवन में धीरे-धीरे जो विकास किया है, वह विकास आग का आभारी है। आग न होती तो हमारा जीवन आदिमकाल के जीवन जैसा ही अविकसित होता।

हमने आग सुलगाना सीखा, इस लिए कुदरत के बंधन से थोड़े आजाद हुए। ऋतुओं के उलटफेर के सामने, ठंडी हवा के सामने आग हमारी रक्षा करती है। रात के वक्त सब जगह अंधेरा छा जाता है तब आग हमारे रास्ते पर प्रकाश फैलाती है।

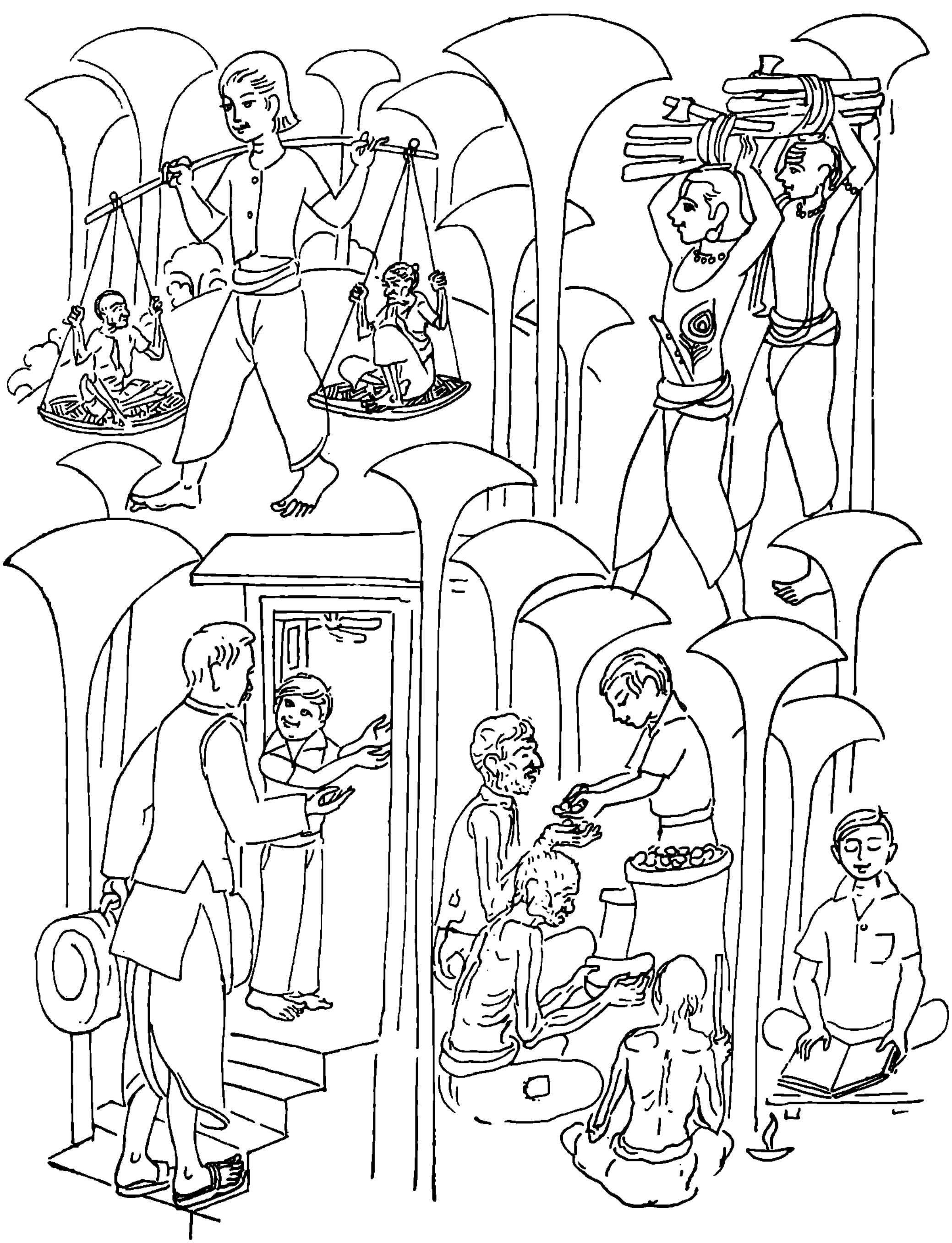
आग हमारा अन्न पकाती है। अग्नि की खोज हुई, उसके साथ ही मनुष्य सभ्यता के शिखर पर एक-के-बाद-एक सीढ़ियां तय करने लगा। कला और उद्योग में भी वह आगे बढ़ा। यह आग विकास का प्रतीक है—मनुष्य के हाथ में उठी हुई एक मशाल! अग्निविद्या याने जीवन के विकास की विद्या!

नचिकेता के युग में अग्निविद्या का एक विशेष महत्व था। विद्यार्थी गुरु के यहां पढ़ने जाते थे। गुरु के यहां यज्ञशाला रहती थी।

इस यज्ञशाला की आग अपवित्र न बने या न बुझे, इसका विद्यार्थी ध्यान रखते थे। गुरु उनको अग्नि का महत्व समझाते थे। अग्नि याने सिर्फ लकड़ियां जलाकर यज्ञकुंड सुलगाना नहीं, अग्नि याने आलस्य छोड़कर शरीर को चुस्त रखना, मन को होश में रखना, बुद्धि को सतेज रखना और इसके द्वारा मिलती तेजस्वी शक्ति का दूसरों के लिए उपयोग करना। यज्ञ किये बिना जो खाये वह चोर माना जाये, ऐसा हमारे विद्वानों ने कहा है।

गुरु ऐसे पांच कर्त्तव्य, पांच यज्ञ जारी रखने का उपदेश देते थे।

ये पांच कर्त्तव्य थे—माता-पिता की सेवा करना, गुरु की आज्ञा का आदर करना, अतिथि का सत्कार करना, गरीबों को दान देना, और अपने काम



में हमेशा तत्पर रहना। ये सच्चे यज्ञ हैं। लेकिन बाद में लोग सही अर्थ भूलकर, दूसरे ही कारणों से बड़े-बड़े यज्ञ करने लगे। राजा अपनी कीर्ति फैलाने के लिए यज्ञ करते थे, ब्राह्मण बड़े-बड़े पंडित गिने जाने के लिए यज्ञ करते थे।

यमराज खुश हुए कि दूसरे वरदान में नचिकेता ने अपने लिए कोई सुख-वैभव मांगने के बजाय ज्ञान मांगा।

उन्होंने अग्नि का अर्थ समझाते हुए कहा, "नचिकेता, असली यज्ञ तो और कहीं नहीं, मनुष्य के दिल में हो रहा है। जंगल से लकड़ी लाकर अग्नि सुलगाने से तो सामान्य अग्नि जलती है। उससे जो यज्ञ होता है, वह सामान्य यज्ञ है। मनुष्य के जीवन में सत्य क्या है यह जानने की लगन पैदा हो, ज्ञान की तीव्र इच्छा जागे, उसे तू सच्ची अग्नि समझ।"

यह सुनते ही नचिकेता के हृदय में अनेक प्रश्न उठने लगे। उसने कहा, "यमदेव, ऐसी अग्नि मैं किस तरह अपने भीतर सुलगा सकूं, कृपा करके बताइये।"

"नचिकेता, ऐसी अग्नि तीन प्रकार से पैदा होती है। उसके लिए शरीर स्वस्थ, मन शांत और आत्मा निर्मल रखनी चाहिए।

"यज्ञवेदी की अग्नि सतेज रखने के लिए क्या करना पड़ता है? वेदी में ईंधन ठीक तरह से डाला जाये, हवन की दूसरी सामग्री ठीक तरह से डाली जाये और घी की आहुति देते रहें, तब यज्ञ की अग्नि दहकती है। उसमें धुंआ भी नहीं होता है और वह बुझती भी नहीं है।

"नचिकेता, शरीर में जो भूख है, वही यज्ञ की अग्नि है। सात्विक और पौष्टिक आहार से उसको सतेज और स्वच्छ रखना चाहिए। हर वक्त कुछ-न-कुछ खाने से यह अग्नि मंद हो जाती है और मनुष्य रोगों का शिकार बन जाता है। शरीर की स्वच्छता ही अग्नि की पहली शिखा है।

"और नचिकेता, शरीर स्वच्छ होने के साथ, मन भी शांत-स्वस्थ होना चाहिए, तभी सही ढंग से विचार किया जा सकता है। उसके लिए अध्ययन, मनन और चिंतन करते रहना चाहिए।

"शरीर को स्वस्थ रखने के लिए जैसे ठीक भोजन की जरूरत होती है, वैसे ही मन को शांत-स्वच्छ रखने के लिए, पढ़ाई की चीजें भी देख-परखकर चुननी चाहिए। हम गंदे और सड़े हुए फल या सब्जी तो खाते नहीं हैं। इसी तरह जिन किताबों में बुरे, निकम्मे विचार हों, ऐसी किताबों से दूर रहना ही अच्छा है।

"पौष्टिक आहार से जैसे शरीर में खून बढ़ता है, वैसे ही अच्छी किताबें पढ़ने से मनुष्य का मनोबल बढ़ता है। ऐसा मनुष्य स्वतन्त्र विचार और स्वतन्त्र निर्णय कर सकता है और दूसरे लोगों के बहकावे पर निर्भर नहीं करता है। वह बहादुर रहता है। इस तरह शरीर के लिए जितनी जरूरी है भूख की आग, उतनी ही जरूरी है मन के लिए ज्ञान की आग।

"शरीर स्वस्थ हो, मन शांत भी हो, लेकिन परीक्षा के वक्त वह टिकता है या नहीं, इसकी हमेशा जांच करते रहना चाहिए।

"आत्मा की पवित्रता अग्नि की तीसरी शिखा है। आचार और कर्तव्य द्वारा अग्नि उज्जवल और पवित्र रहती है। हमको जो कुछ मिला है, उसका उपयोग दूसरों की भलाई के लिए जबतक न करें, तबतक उसका कुछ अर्थ नहीं निकलता। आत्मा की ज्योति को उज्जवल रखने का यज्ञ याने खुद को मिटा-मिटाकर दूसरों के उपयोग में आने का सत्कर्म! जो इन तीनों प्रकार से अग्नि को ठीक प्रज्वलित रखता है, वही अग्नि-विद्या को समझ सकता है।"

इतना कहकर यमराज रुके। फिर अचानक उनको विचार आया कि अग्निविद्या जैसे कठिन विषय पर मैंने इतना सारा कहा तो सही, लेकिन इस छोटे बच्चे ने उसे समझा या नहीं?

उन्होंने कहा, "नचिकेता, तूने मेरी बात समझी? मैंने तुझे जो कुछ कहा इसमें से कुछ याद रहा?"

नचिकेता ने प्रणाम करके कहा, "मुझे सीखने की सच्ची लगन है यमदेव, इसलिए आपने जो कहा उसका एक-एक शब्द मैंने सुना और याद रखा है। आप कहें तो सब कह जाऊं", ऐसा कहकर यमराज ने जो कुछ कहा था, वह सब उसने दुहरा दिया।



यमराज बहुत खुश हुए और बोले "नचिकेता, अब तू तीसरा वरदान मांग ।"

नचिकेता ने प्रणाम करके कहा, "यमदेव आपके वरदान से तो मैं धन्य हो गया हूं । मेरे मन में एक प्रश्न चुभता रहता है । उसका उत्तर सिर्फ आप ही दे सकते हैं । कुछ लोग कहते हैं कि मृत्यु के बाद आत्मा भी नहीं रहती है । कुछ लोग कहते हैं कि मृत्यु के बाद आत्मा बची रहती है । आप मुझे कृपा कर बताइये कि इसमें सत्य क्या है ? मुझे मृत्यु का रहस्य समझाइये प्रभु ! यही मेरी तीसरी इच्छा है ।"

मौत के बाद आत्मा बचती है या नहीं, यह खोज निकालना क्या आसान है ? भय से जो कांप न उठे, प्रलोभन के जो वश में न हो, पक्के निश्चय और ईमानदारी से जो उसकी तलाश में सारी जिंदगी गुजार दे, उसको शायद उसकी झांकी भर मिले । नचिकेता में इतनी सारी योग्यता है ?

यमराज ने उसकी परीक्षा लेने के लिए कहा, "देवों ने भी इससे पहले मुझसे ऐसा ही सवाल पूछा था । आत्मा का स्वरूप बहुत छोटा होने से आसानी से जाना नहीं जाता । नचिकेता, तू ऐसा वरदान न मांग । उसके बदले कुछ और मांग ।"

नचिकेता ने कहा, "मैंने भी सुना है कि देवों को ऐसी शंका हुई थी । इसीलिए मुझे उसे जानने की इच्छा है । आप कहते हैं कि उसे आसानी से जाना नहीं जाता, फिर भी यह सही है कि आपके सिवा दूसरा कोई उसे समझा नहीं सकता । इस वरदान से ज्यादा कीमती दूसरा कोई वरदान मैं क्या मांगूं ? "

यमराज ने कहा, " हठ छोड़ दे नचिकेता । देख, उसके बदले में तुझे बहुत कुछ देने को तैयार हूं । तुझे चाहिए तो लम्बी उम्र मांग, इच्छा हो तो राजवैभव मांग । मनुष्य के लिए जो प्राप्त करना मुश्किल है, ऐसा कुछ भी मांग । सारी दुनिया में तेरी कीर्ति फैले, सारा जीवन तेरा विविध सुखभोग में बीते, ऐसा कुछ मांग । लेकिन मृत्यु के बाद क्या होता है, इसे जानने की बात छोड़ दे ।"

नचिकेता ने नम्रता से कहा, "यमदेव, मुझे कोई भोग-वैभव नहीं चाहिए। मुझे तो जन्म, मृत्यु, आत्मा के बारे में ही जानना है। यहां आप मुझे कितना भी वैभव दें, लेकिन एक दिन मिट्टी में ही वह मिल जानेवाला है। ऐसे क्षणिक सुख को लेकर मैं क्या करूंगा? और आप जैसा गुरु भी मुझे कहां मिलेगा? आपके पास से दूसरा कुछ भी प्राप्त करने की मुझे इच्छा नहीं है।"

नचिकेता के इस जवाब से यमराज प्रसन्न हुए। उन्हें लगा कि नचिकेता सच्चा जिज्ञासु है और सत्य जानने के लिए सब कुछ त्याग करने को तैयार है। इसलिए वे उसे आत्मज्ञान देने के लिए राजी हो गये।

उन्होंने कहा, "नचिकेता, आत्मा का ज्ञान सिर्फ उसके बारे में पढ़ने या सुनने से नहीं होता। तू चाहे अक्ल के जितने दाव-पेंच लगा, हाथ कुछ नहीं आयेगा। उसके लिए तो मनुष्य को एकदम भीतर से अपना बदलाव करना चाहिए।

"मैंने तुझे अग्नि के बारे में कहा है। अपने में बदलाव करने की पक्की लालसा की ऐसी अग्नि जलानी चाहिए, जीवन में आनेवाले विविध लोभ छोड़ने चाहिए और जब मनपसंद और लायक के बीच चुनाव करना हो तो लायक को चुनना चाहिए।

"नचिकेता, आत्मा का रूप समझना कठिन है। लेकिन तूने आग्रह से पूछा है इसलिए मैं तुझे बताता हूं। तेरे जैसे प्रश्न पूछनेवाले भी मुझे कहां मिलते हैं?

"आत्मा का ज्ञान जैसे दुर्लभ है, वैसे ही ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा रखनेवाले भी दुर्लभ ही हैं।

"ऐसा समझ कि शरीर एक रथ है। शरीर की इंद्रियां रथ में जुड़े हुए घोड़े हैं और आत्मा इस रथ को चलानेवाला सारथी है। रथ जैसे सारथी के वश में होना चाहिए, वैसे ही इंद्रियां मन और आत्मा के काबू में होनी चाहिए।

"बहुत लोग ऐसे होते हैं जिनकी इंद्रियां बलवान हैं, मन चंचल है। मनुष्य का उनके आगे कुछ जोर नहीं चलता। यह बात सच है। फिर भी इस मनुष्य में ही एक ऐसी दृढ़ बुद्धि भी रही है, जिसके द्वारा वह इंद्रियों

और मन पर काबू पाकर ऊंचे लक्ष्य की ओर बढ़ सकता है । इसके लिए मन और शब्दों की एकता बनानी चाहिए और विचार-व्यवहार समान बनाने चाहिए ।

"विवेकी आदमी जब अपने अंदर शांत होता है, तब आत्मा का प्रकाश जगमगाने लगता है । इसलिए मैं तुझे पुकारकर कहता हूं, बेटा, उठ जाग और जब तक अपनी मंजिल तक नहीं पहुंचता है, रुक मत !

"आत्मा का स्वरूप जानने के लिए जब तू कमर कसकर उठेगा, तब तुझे अनुभव होगा कि आत्मा छोटे अणु से भी ज्यादा छोटी है और साथ ही महान से भी ज्यादा महान है । वह मनुष्य के अंतर में है ।

" वह पैदा नहीं होती और मरती भी नहीं है । वह अमर है और शरीर, मन तथा बुद्धि से बिलकुल अलग होने के बावजूद वह इन सबका चालक है । वह कैसे शरीर में रहती है और कैसे शरीर को छोड़ जाती है, यह अत्यंत गूढ़ बात है । वह सिर्फ अनुभव से समझा जा सकता है । आत्मा को जानने से मनुष्य को भय नहीं रहता, मोह नहीं रहता, शोक नहीं रहता ।

"मनुष्य को जब अनुभव होता है कि वह स्वयं आत्मा है, तब उसका सारा अज्ञान दूर हो जाता है । इसलिए आत्मज्ञान को ही सच्चा ज्ञान कहा गया है । आत्मा को "ब्रह्मानंद" कहा है क्योंकि वैसा आनन्द और कहीं नहीं प्राप्त होता है ।

"जो विवेकी मनुष्य सब नाश होनेवाली वस्तुओं में रहकर भी आत्मा को जानता है, उसे कभी न मिटनेवाला सुख मिलता है, दूसरे को नहीं ।"

इतना कहकर यमराज शांत हुए ।

नचिकेता ने यमराज से प्राप्त हुई इस विद्या पर गहरा चिंतन किया और उसके हृदय में आत्मा का प्रकाश फैलने लगा । अज्ञान के अंधकार से वह मुक्त हुआ और उसे ब्रह्म की प्राप्ति हुई ।

मात्र नचिकेता ही नहीं, जो भी मनुष्य इस ढंग से आत्मा का प्रत्यक्ष अनुभव करता है, वह ब्रह्म को प्राप्त करके अमरत्व प्राप्त करता है ।

●

- कृतज्ञ और कृतघ्न
- भगीरथ
- युधिष्ठिर का स्वर्गारोहण
- ब्रह्मा का गर्वहरण
- शरणागत वत्सलता
- कहानी एक तूफान की
- हजरत निजामुद्दीन औलिया
- अंगुलिमाल
- प्रभु का प्रकाश
- तीन साधु

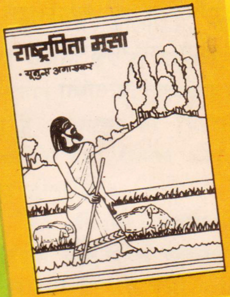
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना 1938में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी । इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके । वह भाषा है हिन्दुस्तानी ।

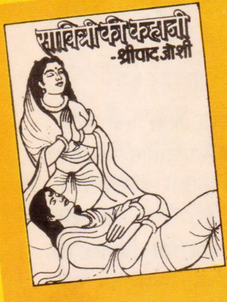
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी हुई कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी पहली किस्त है । हर किताब की क़ीमत दो रुपये होगी ।

बच्चों की कहानियां











एकमात्र विक्रेता
एस. चांद एंड कंपनी लि.
पो. बॉ. नं. ५७३३
रामनगर
नयी दिल्ली - ११० ०५५